International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

सामाजिक परिवर्तन में दर्शन की भूमिका

डॉ. बिनोद राम

सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग,

गोस्सनर महाविद्यालय, राँची विश्वविद्यालय, राँची

वैश्वीकरण के इस युग में विज्ञान के विकास भौतिकवादी संस्कृति, बहुलसंस्कृतिवाद, अंधविश्वास, धार्मिक रीति-रिवाज, छुआछूत, जाति-प्रथा, लिंग-भेद इत्यादि लोगों के सामने एक संकट पैदा कर दिया है। इस संकट का समाधान कैसे किया जाय, दार्शनिकों के लिए चिंता का विषय है। यहाँ दर्शन की भूमिका अहम् हो जाती है। दर्शन कोई वस्तु नहीं एक पद्धति या विचार है जिसके द्वारा सत्य का अन्वेषण किया जाता है। दर्शन का काम ही है सत्य की खोज करना और उसे समाज के सामने रखना। दार्शनिक पद्धति या विचार पहले शक्ति रूप में मन में आती है और उसके अनुरूप शरीर कार्य करता है, तब परिवर्तन होता है। जब से मानव सभ्यता का विकास हुआ है तब से आज तक जो भी सामाजिक परिवर्तन हुए हैं उसमें दर्शन एवं दार्शनिकों की अहम् भूमिका रही है। यदि हम ग्रीक दर्शन को लें तो थेलीज, प्रोटागोरस, सुकरात, प्लेटो, अरस्तू आदि के दर्शन में हम देख सकते हैं तथा प्राच्य दर्शन में वैदिक दर्शन से लेकर छठी सदी ईसा पूर्व महात्मा बुद्ध एवं महावीर का दर्शन, मध्यकाल से पूर्व आधुनिक काल तक में नानक, कबीर, रैदास आदि का दर्शन तथा 19वीं सदी में स्वामी विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर, ज्योतिबाफूले, डी0के0 कार्वे, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, राजा राममोहन राय, महात्मा गाँधी, डॉ. भीमराव अम्बेदकर इत्यादि का दर्शन इसका जीता-जागता उदाहरण है। इन लोगों ने शुरू से ही अपने दार्शनिक विचारों से समाज में, जीवन के सभी क्षेत्रों में परिवर्तन लाने का काम किया। कहा भी जाता है कि जब किसी देश के विषय में जानना हो तो पहले उस देश के दर्शन को जानो। दर्शन किसी भी देश का दर्पण होता है। कार्ल मार्क्स का दर्शन सम्पूर्ण यूरोप महादेश में क्रांति ला दी और उसका प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर पड़ा। अतः इतिहास गवाह है कि जब कभी भी सामाजिक परिवर्तन हुए हैं उसमें दर्शन की अहम् भूमिका रही है। दर्शन के अभाव में सामाजिक परिवर्तन की कल्पना बेमानी है।

सामाजिक परिवर्तन का अर्थः- International Encyclopadea of the Social Sciences के

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

अनुसार, सामाजिक परिवर्तन सामाजिक संरचना में आए किसी महत्वपूर्ण परिवर्तन को कहते हैं। इसके अंतर्गत उन सभी सामाजिक प्रतिमानों (आचरण के नियमों), मूल्यों और सांस्कृतिक प्रतीकों में परिवर्तन भी शामिल है, जिनके माध्यम से सामाजिक संरचना की अभिव्यक्ति होती है।1

मैकीवर एवं पेज ने सामाजिक संरचना का अर्थ बतलाया है- 'वर्तमान संबंधों की कड़ी।' उन संबंधों में जब परिवर्तन होता है तो वही सामाजिक परिवर्तन है। इसलिए मैकीवर एवं पेज ने भी सामाजिक संरचना में परिवर्तन को ही सामाजिक परिवर्तन कहा है। जोन्स ने सामाजिक क्रियाएँ, सामाजिक प्रतिमानों, सामाजिक क्रियाओं या सामाजिक व्यवस्थाओं के किसी पक्ष में कोई भेद या परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहा है। गिलिन ने बतलाया है कि जीवन के जाने-माने तरीकों में जब कोई बदलाव हो जाता है तो वह सामाजिक परिवर्तन है। डेविस के अनुसार सामाजिक परिवर्तन वैसे परिवर्तन है जो समाज की संरचना या क्रियाओं में होते हैं। जॉनसन ने भी सामाजिक परिवर्तन सामाजिक संरचना के परिवर्तन को कहा है। उन्होंने बतलाया है किसी भी वस्तु के अंगों के सापेक्षिक रूप से परस्पर स्थायी संबंध 'संरचना' है।2

परिवर्तन प्रत्येक युग में प्रत्येक समाज की एक सर्वव्यापी विशेषता रही है। समाज जैसे-जैसे सरलता से जटिलता की ओर बढ़ता जाता है, सामाजिक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन की गति भी तीव्र होती जाती है। इस परिवर्तन में दर्शन एवं दार्शनिक उत्प्रेरक का काम करता है। इस संदर्भ में प्रो0 ग्रीन का कथन है- "सामाजिक परिवर्तन समाज में सदैव विद्यमान रहता है क्योंकि प्रत्येक समाज में कुछ-न-कुछ मात्रा में असंतुलन सदैव बना रहता है।3 ब्रिटिश दार्शनिक लॉक ने विचार प्रस्तुत किया कि मनुष्य में सदैव आगे बढ़ने की प्रवृत्ति होती है और यही प्रवृति तथा इससे संबंधित प्रयत्न सामाजिक परिवर्तन प्रमुख कारण है। कॉम्टे ने भी यह स्वीकार किया कि प्रगति की धारणा एक प्राकृतिक नियम है तथा सभी परिवर्तनों को विकास के कुछ स्तरों के माध्यम से समझा जा सकता है। 19वीं शताब्दी के उतरार्द्ध में हरबर्ट स्पेन्सर ने दूसरा ही विचार प्रस्तुत प्रस्तुत किया। उनके अनुसार- "प्रत्येक समाज में कुछ निश्चित स्तरों के माध्यम से सदैव परिवर्तन होता रहता है। यह परिवर्तन व्यक्ति की इच्छा अथवा प्रयत्नों से नहीं होता, बल्कि ऐसी प्राकृतिक दशाओं के प्रभाव से होता है जिन पर मनुष्य का कोई नियंत्रण नहीं होता।"4

तर्कशास्त्रः- तर्कशास्त्र में अनुमान या युक्तियों का अध्ययन किया जाता है। कैसे हम सभी और

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

गलत युक्तियों के बीच अंतर कर सकते हैं, यह तर्कशास्त्र का मुख्य विषय है। तर्कशास्त्र के अंतर्गत वैज्ञानिक विधि का अध्ययन भी शामिल है। बिना सत्यापन (Verification) के किसी भी प्राक्कल्पना (Hypothesis) को सत्य स्वीकार नहीं करना है, यह वैज्ञानिक विधि का सार तत्व है।

तर्कशास्त्र का अध्ययन और अध्यापन अगर सही ढंग से हो, तो यह हमें अंधविश्वासी मानसिकता से तार्किक-वैज्ञानिक दृष्टिकोण की ओर ले जा सकता है। यह अपने-आप में सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण स्त्रोत है। समीक्षात्मक दृष्टिकोण का विकास होने पर हम अपनी परम्परा या सांस्कृतिक विरासत का अंधानुकरण करने की बजाय उसकी समीक्षा करते हुए, उसमें जो कुछ तर्कसंगत और नैतिक है, उसे संरक्षित रखते हुए और अधिक विकसित कर सकते हैं; जबकि जो कुछ अतर्कसंगत और अनैतिक है, उसका त्याग कर सकते हैं। (सांस्कृतिक विरासत के अंतर्गत भाषा, खान-पान, भेष-भूषा, रहन-सहन के अलावा विचार और नैतिक मूल्य भी शामिल हैं, जिनमें दार्शनिकों को विशेष रूचि रहती है।) इसी तरह, विदेशी प्रभाव के प्रति भी हम ऐसा ही समीक्षात्मक दृष्टि अपना सकते हैं। उसमें जो कुछ तार्किक और नैतिक है, उसे हम ग्रहण कर सकते हैं और जो कुछ अतार्किक और अनैतिक हो, उसे हम अस्वीकार कर सकते हैं। इस तरह, यह समीक्षात्मक दृष्टिकोण समाज को बेहतर दिशा में ले जाने में सहायक है।

नीतिशास्त्रः- आज के समय नीतिशास्त्र की तीन उपशाखाएँ मानी जाती हैः अधिनीतिशास्त्र, मानक नीतिशास्त्र और व्यावहारिक नीतिशास्त्र। वैसे तो ऐतिहासिक दृष्टि से अधिनीतिशास्त्र और व्यावहारिक नीतिशास्त्र का उदय बीसवीं सदी के पूर्वार्ध और उतरार्द्ध में मानक नीतिशास्त्र के काफी बाद हुआ है, लेकिन तार्किक दृष्टि से ऊपर दिया गया क्रम ही ठीक है। अधिनीतिशास्त्र मानव नीतिशास्त्र के अध्ययन की पहली सीढ़ी है।

मानक नीतिशास्त्र के अंतर्गत मुख्यतः एक तर्कसंगत नैतिक मापदण्ड की तलाष की जाती है, जिनके आधार पर उचित और अनुचित कर्मों और नैतिकता के नियमों के बीच अंतर किया जा सके। मानव नीतिशास्त्र के निष्कर्षों के आधार पर किसी समाज की प्रचलनात्मक नैतिकता (customary morality) की समीक्षा भी की जा सकती है। उदाहरण के तौर पर, अगर हम स्वतंत्रता और समता के मूल्यों की दृष्टि से देखें तो जाति, लिंग, रंग या धार्मिक विश्वास के आधार पर भेदभाव का कोई औचित्य नहीं है। इस तरह, मानक नीतिशास्त्र का अध्ययन-अध्यापन नैतिक मूल्यों प्रतिमानों

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

(आचरण के नियमों) और प्रचलनों को अधिक परिष्कृत बनाकर बेहतर दिशा में नैतिक परिवर्तन में सहायक हो सकता है।

जैसा कि पहले भी उल्लेख किया गया है, नीतिशास्त्र की नवीनतम शाखा व्यावहारिक नीतिशास्त्र के अंतर्गत किसी तात्कालिक महत्व की व्यावहारिक समस्या पर नीतिशास्त्र को लागू किया जाता है। आज भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ में भी, लिंग, जाति, वर्ग, रंग (नस्ल) और धार्मिक विश्वास पर आधारित भेदभाव, अमीरों का गरीबों के प्रति दायित्व, शिशु और मातृ मृत्यु-दर, राजनीतिक नैतिकता, मीडिया और राजनीति पर कॉरपोरेट जगत का बढ़ता प्रभाव, पेड न्यूज सहित मीडिया नीतिशास्त्र, पर्यावरण, युद्ध और आतंकवाद जैसी समस्याएँ तात्कालिक और व्यावहारिक महत्व की हैं। इन समस्याओं पर नीतिशास्त्र को लागू कर दार्शनिक बेहतर दिशा में सामाजिक परिवर्तन के पक्ष में कारगर हस्तक्षेप कर सकते हैं।

दरअसल, समाज और राजनीति दर्शन और व्यावहारिक नीतिशास्त्र के विषय-वस्तु के बीच कुछ परस्पर मेल (overlapping) भी है। उदाहरण के तौर पर, सामाजिक परिवर्तन, लिंग समानता, समाजिक स्तरीकरणः जाति और वर्ग, नस्लवाद (racism), राजनीतिक, नैतिकता, पर्यावरण, युद्ध और आतंकवाद जैसी समस्याओं का अध्ययन समाज और राजनीति दर्शन में भी होता है। इनमें से कौन से मुद्दे कब किसी समाज में तात्कालिक महत्व के मुद्दे बन जायेंगे, यह कहा नहीं जा सकता है।

समाज और राजनीति दर्शनः- समाज और राजनीति दर्शन के अंतर्गत दार्शनिक विधि से समाज और राजनीति का अध्ययन किया जाता है। तर्कशास्त्र के अलाव नीतिशास्त्र का भी समाज और राजनीति दर्शन से निकट संबंध है। समाज और राजनीति दर्शन के मानक पक्ष के अंतर्गत मानक नीतिशास्त्र के निष्कर्षों को समाज और राजनीति पर लागू किया जाता है। मानक नीतिशास्त्र के निष्कर्षों के प्रकाश में सामाजिक आदर्शों का निर्धारण और फिर उनके आलोक में किसी विशेष समाज में आ रहे परिवर्तन का मूल्यांकन करना समाज दार्शनिक की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है।

मेरे विचार में कुछ संशोधनों के साथ उपयोगितावादी ही नैतिकता का सर्वश्रेष्ठ मापदण्ड है। यहाँ पर इसके विस्तार में जानना प्रासंगिक नहीं है। इसके अलावा, मेरे अनुसार स्वतंत्रता, समता और बंधुता के सामाजिक आदर्श का उपयोगितावादी दृष्टि से समर्थन किया जा सकता है।

फिर, इन मूल्यों के आलोक में किसी समाज में आ रहे परिवर्तनों का मूल्यांकन किया जा

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

सकता है। जाति, वर्ग, लिंग-भेद, नस्लवाद, विवाह, परिवार, तलाक और सम्पति जैसे विषयों पर मानक दृष्टि से विचार किया जा सकता है।

इसी तरह, राजनीतिक जीवन पर, अन्य बातों के अलावा, राजनीतिक विचारधाराओं का भी काफी प्रभाव होता है, जैसे, भारतीय संदर्भ में लोकतंत्र (उदारवाद), धर्मनिरपेक्षतावाद, समाजवाद, साम्यवाद, सम्पूर्ण क्रान्ति, अम्बेडकरवाद, हिन्दुत्ववाद और मानवतावाद जैसी विचारधाराओं का राजनीति पर प्रभाव है। इन विचारधाराओं की दार्शनिक समीक्षा (अवधारणाओं का स्पष्टीकरण और विश्वासों का समीक्षात्मक मूल्यांकन) द्वारा राजनीतिक दार्शनिक एक बेहतर राजनीति दर्शन की ओर बढ़ने में सहायक हो सकते हैं। यह राजनीति के क्षेत्र में उनका मुख्य योगदान हो सकता है।

मोटे तौर पर, हम कह सकते हैं कि जो परिवर्तन अंधविश्वास से तार्किक-वैज्ञानिक दृष्टिकोण की दिशा में, धर्म पर आधारित परम्परागत नैतिकता से तर्कसंगत, धर्मनिरपेक्ष नैतिकता की दिशा में, जातिविहीन, वर्गविहीन समाज की दिशा में, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, मानवतावाद और लोकतांत्रिक समाजवाद की दिशा में हों, वे बेहतर दिशा में सामाजिक परिवर्तन हैं; और जो इनके विपरीत दिशा में हों, वे बदतर दिशा में परिवर्तन हैं। दार्शनिक अपनी लेखनी, कथनी और करनी द्वारा बेहतर दिशा में आ रहे परिवर्तनों का समर्थन कर सकते हैं, और बदतर दिशा में आ रहे परिवर्तनों का विरोध कर सकते हैं। आज के समय में भारत को आर्थिक गैरबराबरी को बढ़ाने वाले पूंजीवाद की ओर धकेलने के प्रयास का, और धर्म के आधार पर नफरत और असहनशीलता फैलाने का सक्रिय विरोध जरूरी है।

धर्म-दर्शनः- धर्म-दर्शन में दार्शनिक विधि से धर्म का अध्ययन किया जाता है। धर्म का स्वरूप क्या है? धार्मिक विश्वास का आधार श्रुति, आस्था और रहस्यानुभूति है या तर्कबुद्धि? ईश्वर का अस्तित्व है या नहीं? आत्मा और मृत्यु के बाद जीवन का अस्तित्व है या नहीं? धर्म-दर्शन में दार्शनिक दृष्टि से इन प्रश्नों पर विचार किया जाता है।

धर्म- दर्शन का धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन से भी निकट संबंध है। आमतौर से एक औसत व्यक्ति अपने जन्म के धर्म को ही सर्वश्रेष्ठ धर्म समझता है, और बाकी धर्मों को हीन दृष्टि से देखता है; चाहे उसे अन्य धर्मों के बारे में कोई जानकारी हो या न हो। विभिन्न धर्मों के अध्ययन से इस किस्म की संकीर्ण मानसिकता और धार्मिक पूर्वाग्रहों से मुक्ति मिल सकती है। लोग अन्य

International Conference – 2025: Developed India @ 2047
Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025
Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

धर्मावलम्बियों के प्रति एक अधिक सहनशील रवैया अपना सकते हैं।

दार्शनिक दृष्टि से धर्मों और उनकी बुनियादी मान्यताओं का अध्ययन इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि आज भी विभिन्न धर्मों का समाज पर काफी प्रभाव है। आमतौर से विभिन्न धर्मावलम्बियों की अपने-अपने धर्म में आस्था (प्रमाण के अभाव में या विरोधी प्रमाण के रहने पर भी दृढ़ विश्वास) रहती है। वे अपने धर्म की बुनियादी मान्यताओं के बारे में तार्किक दृष्टि से सोच भी नहीं पाते हैं, बल्कि कई बार ऐसा करना उनकी कल्पना से भी परे होता है। दार्शनिक विधि से धर्मों का अध्ययन-अध्यापन इस दृष्टि से बहुत उपयोगी है कि यह धार्मिक अंधविश्वासों से मुक्ति दिला कर समाज के धर्मनिरपेक्षीकरण (secularization) में सहायक हो सकता है। इस तरह, सही तरीके से धर्म-दर्शन का अध्ययन-अध्यापन बेहतर दिशा में सामाजिक परिवर्तन में सहायक हो सकता है।

इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन में दर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। चाहे भारतीय दर्शन को देखा जाय अथवा पाश्चात्य दर्शन को। पाष्चात्य जगत में भी अनेक उदाहरण पाते हैं जिसमें दार्शनिकों को अपनी प्राण गवानी पड़ी। जैसे सुकरात को विष का प्याला पीना पड़ा। ब्रूनो को जीवित जला दिया गया। सिर्फ इसलिए कि धार्मिक अंधविश्वास को मानने को तैयार नहीं थे। और आधुनिक पाश्चात्य दार्शनिकों ने खास कर बेकन, निकोलस, मार्सिलियस फिसिनस, गिओर्दानों ब्रूनो, टोमस केम्पानेला, देकार्त, स्पिनोजा आदि चिंतकों ने धार्मिक अंधविश्वास से हटकर तर्क की कसौटी पर सत्य से समाज को अवगत कराने का काम किया। इसमें विज्ञान का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसी संदर्भ में पाश्चात्य दार्शनिक प्रो0 जोड की उक्ति याद आती है- "यदि दर्शन केवल मानसिक कसरत भर है तो इससे यह फायदा है कि मन की कसरत हो जाती है जो मन के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।"5 अर्थात् मन या चेतना जो भाव या विचार बनता है वही जब कार्यरूप लेता है तो परिवर्तन या विकास कहलाता है।

निष्कर्षः- निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि सामाजिक परिवर्तन में दर्शन की वही भूमिका होती है जो शरीर में जल की। प्राचीन काल से आज तक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो जहाँ भी जब कभी भी परिवर्तन हुए हैं चाहे वह आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक या सांस्कृतिक परिवर्तन हो उसके मूल में 'दर्शन' एवं 'दार्शनिक' ही रहे हैं। दर्शन का उद्देश्य सत्य की खोज करना और उस सत्य से समाज को अवगत कराना। आस्था एवं विश्वास की जगह तर्क एवं बुद्धि की

International Conference – 2025: Developed India @ 2047

Charting Multidisciplinary and Multi-Institutional Pathways for Inclusive Growth and Global Leadership held on 4th & 5th April, 2025

Organised by: IQAC - Gossner College, Ranchi

कसौटी पर सत्यान्वेषण दर्शन के मूल में है जो सामाजिक परिवर्तन में बीज बोने का काम करता है। दर्शनशास्त्र के विद्यार्थी, शिक्षक या दार्शनिक वैचारिक और नैतिक क्रांति या दूसरे शब्दों में, दार्शनिक क्रांति के अलावा सामाजिक और राजनीतिक क्रांति में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। दर्शन न सिर्फ विचारधारा है बल्कि जीने का एक सम्यक् ढंग भी है। दर्शन हमें समाज एवं परिवार में उच्च मूल्यों के संग गौरवपूर्ण तरीके से जीने की प्रेरणा देता है। यह समाज का प्रकाश स्तम्भ एवं भावात्मक परिवर्तन का नियामक है।

संदर्भ सूची:-

1. डॉ0 रमेन्द्र, समाज और राजनीति दर्शन, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली, पृ0सं0- 41
2. वर्मा, प्रो0 अशोक कुमार, प्रारंभिक समाज एवं राजनीति दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृ0सं0- 115
3. A.W. Green, Sociology, Page No.- 615
4. P. Sorokin, Contemporary Sociological Theories, Page No.- 544
5. C.E.M., Joad, Return to Philosophy, Page No.- 141-142